17. आई॰ ए॰ रिचर्ड्स के काव्य सिद्धांत

आई॰ ए॰ रिचर्ड्स अंग्रेजी के नए समीक्षकों में गिने जाते हैं, जिन्होंने समीक्षा के क्षेत्र में मूल्य और सम्प्रेषण को केन्द्र में रखकर एक नई पद्धति को जन्म दिया। पूर्ववर्ती समीक्षा का मूल्यांकन करते हुए उन्होंने कविता और कला की सम्प्रेषणीयता को सर्वोपरि माना। कहा कि इनकी श्रेष्ठता का मुख्य आधार सम्प्रेषण (communication) है। जो कविता या कलाकृति अपने मंतव्य को जितनी अधिक तीव्रता और सफलतापूर्वक सम्प्रेषित कर सकेगी, वह उतनी ही श्रेष्ठ मानी जाएगी अर्थात् सम्प्रेषणीयता ही किसी कविता की श्रेष्ठता का मानदण्ड है। उनकी चर्चित कृतियाँ हैं—'प्रिंसीपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' तथा 'साइन्स एण्ड पोइट्री'।

रिचर्ड्स का महत्त्व न केवल सम्प्रेषण सिद्धांत के प्रस्तुकर्त्ता के रूप में है, बल्कि व्यावहारिक समीक्षा के पुरस्कर्त्ता के रूप में भी है। मूलतः वैज्ञानिक आइवर आर्मस्ट्रांग रिचर्ड्स ने मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि अपनाते हुए भाषा पर सर्वाधिक गहनता के साथ विचार किया, साथ ही संवेदनों के संतुलन पर बल देते हुए एक नई समीक्षा पद्धति विकसित की। उन्होंने मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान और अध्यात्म दर्शन के आलोक में अपने काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों की स्थापना की है।

आई॰ ए॰ रिचर्ड्स ने कवि को एक सम्प्रेषक (communicator) कहा है और माना है कि, "सम्प्रेषण का कार्य अत्यन्त कठिन है। सम्प्रेषण किसी ठोस वस्तु के समान नहीं होता। काव्य या कलागत सम्प्रेषण वहीं सम्भव होता है, जहाँ एक मस्तिष्क (कवि या कलाकार) अपने परिवेश पर ऐसा प्रभाव डालता है अथवा उसका संयोजन करता है कि दूसरा मस्तिष्क (अर्थात् श्रोता या दर्शक) उससे प्रभावित हो उठे। उस दूसरे मस्तिष्क अर्थात् श्रोता या दर्शक की स्थिति ठीक पहले मस्तिष्क अर्थात् कवि या कलाकार के अनुरूप हो जाती है।"

इसके लिए वे मानते हैं कि किसी वस्तु या स्थिति के पूर्ण अवबोध के लिए कवि या कलाकार में जागरूक निरीक्षण-शक्ति होनी चाहिए। कलाकार में साधारणता (Normality) का गुण भी होना चाहिए। उसके अनुभव अन्य व्यक्तियों के अनुभव के मेल से प्रस्तुत होकर ही सम्प्रेषणीय हो सकते हैं।

कहने का अर्थ यह है कि कविता अथवा कलाकृति की प्रतिक्रियाएँ एक रूप/समरूप (Uniform) होनी चाहिए। उनमें वैभिन्य न हो। जैसा कि हमने ऊपर कहा, रिचर्ड्स कवि या कलाकार में साधारणता के गुण को आवश्यक मानते हैं। यदि वह साधारण नहीं होगा तो उसकी मूल्यवान से मूल्यवान कृति भी सम्प्रेषित नहीं हो सकेगी। इसका कारण यह है कि साधारण स्तर से ऊपर उठने पर अथवा साधारण से कमतर स्तर की होने पर ग्राहक (Receipient) उसे ग्रहण (Receive) नहीं कर पाएगा। इसके साथ-साथ उन्होंने समीक्षक से भी यह अपेक्षा की है कि उसे विषय का पूर्ण ज्ञान हो। विषय के ज्ञान के अभाव में वह कृति का सही मूल्यांकन नहीं कर पाएगा। वह सम्प्रेषण की सफलता की परीक्षा तभी कर सकता है, जब वह रचना को सम्यक् रीति से पढ़ना जानता हो।

सम्प्रेषण में भाषा का विशेष महत्त्व है। रिचर्ड्स कहते हैं, "कविता के सम्प्रेषण का माध्यम है—भाषा।" भाषा के दो भेद होते हैं—तथ्यात्मक (Referential) और रागात्मक (Emotional) । उनका यह भी विचार है कि कवि वैज्ञानिक के समान तथ्यों का अन्वेषण नहीं करता, बल्कि वह रागात्मक अवस्थाओं का सर्जन करता है। भाषा कुछ ऐसे प्रतीकों का समूह है, जो श्रोता और पाठक के मन में, कवि के मन के अनुरूप मनःस्थिति को उत्पन्न कर दे।...शब्द अपने आप में पूर्ण नहीं होते, न स्वतंत्र होते हैं। उनके साथ नाद, शब्द-पहचान, भाव-विचार, प्रसंग आदि भी जुड़े रहते हैं। भाषा के प्रभाव-स्तर इनसे ही निर्धारित होते हैं।

रिचर्ड्स भाषा का जो दूसरा भेद बताते हैं—रागात्मक, वह वास्तव में रागात्मक अर्थ है। जबकि पहला भेद, तथ्यात्मक है, जो तथ्यों का ज्ञान कराता है। उनके मत से कविता की भाषा तथ्यात्मक अनुभूति नहीं कराती, रागात्मक अनुभूति कराती है। यही भाषा का रागात्मक अर्थ है। यह रागात्मक अर्थ कविता की भाषा का ही हो सकता है। यह उसी में सम्भव है, क्योंकि कविता मनुष्य के मन में राग अर्थात् प्रेम अथवा लावण्य का भाव पैदा करती है। मनुष्य के मन में रागात्मकता जगाने का काम कवि भाषा के रागात्मक अर्थ से ही कर पाता है। इस कार्य में तथ्यात्मक भाषा कोई सहायता नहीं कर पाती।

कविता में रिचर्ड्स ने लय को अत्यावश्यक माना है। वे कहते हैं कि लय (Rythm) केवल ध्वनियों की व्यवस्था नहीं है, उसमें गम्भीर भावनाएँ और शब्दों के अर्थ भी नियोजित रहते हैं। कहने का अर्थ यह है कि लय की स्थिति केवल ऊपरी धरातल पर नहीं रहती, उसका विकास मन और भाषा की गहराई में होता है। प्रत्येक शब्द के अलग-अलग और कई तरह के प्रभाव हुआ करते हैं, जो उसके प्रयोग की स्थिति पर निर्भर रहते हैं। जैसी प्रयोग की स्थिति, वैसा ही उसका प्रभाव। एक लय

ऊपरी भी है, जो शब्दों के द्वारा आती है, किन्तु आंतरिक लय का कार्य भाषा के रागात्मक अर्थ से ही सम्भव है। कविता में दूसरी या बाह्य लय के लिए भी कोमल ध्वनि या नाद वाले शब्दों की आवश्यकता होती है। कोमल नाद या उच्चारणवाले शब्द निश्चित रूप से रागात्मक अर्थ वाले होंगे। यहीं यह बात स्मरण रखने की है कि कोमलकांत पदावली अर्थात् कोमल नाद वाले शब्द राग अथवा प्रेम के अतिरिक्त उग्र अथवा कठोर भाव उत्पन्न नहीं कर सकते। अंततः यही कि कविता में रागात्मक अर्थ वाली भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

इस रागात्मक पक्ष का एक और उद्देश्य है। गहराई से विचार करें तो हम पाएँगे कि जैसा कि रिचर्ड्स ने कहा है, "आज जब प्राचीन परम्पराएँ एवं आस्थाएँ समाप्त हो रही हैं, मूल्यों का विघटन हो रहा है, तो सभ्य समाज कविता के सहारे ही अपनी मानसिक व्यवस्था बनाए रख सकता है, क्योंकि काव्य से ही व्यक्ति और समाज में मानसिक संतुलन बढ़ता है।"

एक स्थल पर रिचर्ड्स ने मनोविज्ञान का सहारा लेते हुए लिखा है कि मन आवेगों का तंत्र (System) है। विचित्र आवेगों (Impulses) के कारण संतुलन बिगड़ जाता है। मन में संतुलन लाने के लिए यह आवश्यक है कि आवेग व्यवस्थित होकर एक स्वर हो जाएँ। मानव जीवन में ऐसे संतुलन और असंतुलन बराबर होते रहते हैं। काव्य और कला का प्रयोजन ही यह है कि वे आवेगों में संतुलन स्थापित कर सकें और उन्हें ऐसा व्यवस्थित कर दें कि भावना को विश्रांति की अनुभूति हो।

यहीं काव्य-मूल्य का प्रश्न उपस्थित हो उठता है। सौन्दर्य को रिचर्ड्स ने एक 'मूल्य' माना है। यह मूल्य-निरपेक्ष (absolute value) है। मनुष्य के मन में निरंतर 'आवेग' उठते-गिरते रहते हैं। उनमें से कुछ आवेग परस्पर सम्बद्ध और अनुकूल होते हैं। जबकि कुछ आवेग परस्पर असम्बद्ध और एक दूसरे के विरोधी या प्रतिकूल होते हैं। उदाहरण के लिए हर्ष और गर्व एक-दूसरे से सम्बद्ध तथा परस्पर अनुकूल हैं, जबकि भय और हर्ष परस्पर असम्बद्ध तथा एक-दूसरे के प्रतिकूल हैं। सौंदर्य के प्रभाव से इन सभी प्रकार के आवेगों में संतुलन या परस्पर सामंजस्य स्थापित हो सकता है। कला का मूल्य इसी बात में निहित है कि वह हमारे आवेगों में संगति और संतुलन स्थापित करे तथा हमारी अनुभूतियों (Sensiblities) के क्षेत्र को व्यापक बनाए। कहें कि हमारे हृदय को विस्तृत बनाए। वह आवेगों के संतुलन के साथ-साथ बाह्य क्रिया के लिए प्रेरित करे।

काव्य के प्रभाव और प्रयोजन के संबंध में रिचर्ड्स ने मूल्य विषयक तीन सिद्धांत निरूपित किए हैं—

(i) कला अन्य मानव-व्यापारों से सम्बंधित है, उनसे अलग अथवा भिन्न नहीं है।

(ii) मानव की क्रियाओं में कला सर्वाधिक मूल्यवान है।

(iii) किसी भी मानव-क्रिया का मूल्य इस बात से निर्धारित होता है कि वह मनोवेगों में कहाँ तक सुव्यवस्था एवं संतुलन उत्पन्न कर पाती है। यह हमारी अनुक्रिया (Response) पर निर्भर है।

याद रहे कि रिचर्ड्स ने 'सौन्दर्य' शब्द के स्थान पर 'अनुभूति/मूल्य' शब्द का प्रयोग किया है। और इस 'मूल्य' की सत्ता हमारे भीतर उद्दीपन में न मानकर, अनुक्रिया में मानी है।

वे विज्ञान और कला का अंतर भी निरूपित करते हैं। पश्चिमी काव्यशास्त्र में इस विषय पर पहले भी चिंतन हो चुका है। रिचर्ड्स ने इसे एक नया चिन्तन आधार प्रदान किया। उनका मत है कि,"प्रत्येक कथन में वस्तुओं की ओर निर्देश किया जाता है। जब निर्दिष्ट वस्तुएँ सच्ची होती हैं और उनके मध्य निर्दिष्ट संबंध भी सच्चा होता है तो उस कथन को वैज्ञानिक कथन कहा जाता है। उदाहरण के लिए जब हम किसी कथन में यह निर्दिष्ट करते हैं कि आग के ताप से वायु हल्की होकर ऊपर उठती है तो हम यहाँ दो सच्ची वस्तुओं तथा उनके सच्चे संबंध की बात करते हैं। इस आधार पर यह कथन वैज्ञानिक माना जाएगा। इसके विपरित यदि किसी कथन में निर्दिष्ट वस्तुओं का सच्चा और झूठा होना महत्वपूर्ण न हो और न उन निर्दिष्ट वस्तुओं के बीच निर्दिष्ट संबंध ही महत्वपूर्ण हो, अपितु वह कथन हमारे भावों और अंतर्वेगों को जाग्रत करे तो ऐसे छद्म कथन को हम साहित्य कहेंगे।"

जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं कविता की भाषा तथ्यात्मक न होकर रागात्मक होती है। इसलिए उसका संबंध बौद्धिक सत्य से नहीं होता, रागात्मक क्रिया से होता है। हमारी भावनाओं को जो बात उचित लगती है तथा बाद में जो प्रतीत नहीं होती, वही काव्य-सत्य है। यह काव्य सत्य ही भाव सत्य या रागात्मक सत्य है।

रिचर्ड्स कविता या कलाओं को 'मनुष्य की सम्पर्णात्मक क्रिया का उत्कृष्ट रूप' मानते हैं। उन्होंने 'कला-कला के लिए' सिद्धांत का विरोध किया है। वे काव्यानुभूति को इस भौतिक जगत् से पृथक् नहीं मानते। उन्होंने नैतिकता को भी मनोवैज्ञानिक मानवतावादी दृष्टि से ही मापा है। उनका बहुत सीधा सा सूत्र है—अच्छा वही है, जो मूल्यवान हो और मूल्यवान वही है, जो मन में संगति एवं संतुलन स्थापित कर सके। अर्थात् 'कला जीवन के लिए' है। और अंततः यह कि "मूल्य और सम्प्रेषणीयता की भित्ति पर ही आलोचना के भवन का निर्माण सम्भव है।" यह रिचर्ड्स की मान्यताओं का संक्षिप्ततम परिचय है।

प्रो० हरिमोहन
वाणी प्रकाशन